



12077CH06

षष्ठः पाठः

सूक्ति-सौरभम्

किसी भी भाषा की सूक्तियाँ उस समाज के मनीषियों द्वारा शताब्दियों तक अनुभूत उनके दैनिक जीवन के अनुभवों को प्रकट करती हैं। ये सूक्तियाँ कलेवर में स्वल्प होते हुए भी अपने में विशाल भाव-गाम्भीर्य को समेटे हुए होती हैं। वस्तुतः इन्हीं सुभाषितों तथा सूक्तियों से ही उस भाषा की समृद्धि द्योतित होती है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक नाना कवियों ने इन में अपने दीर्घकालीन अनुभवों को शब्दबद्ध किया है। चाणक्य, भर्तृहरि, विष्णुशर्मा के सुभाषित जहाँ चिरकाल से प्रसिद्ध रहे हैं, वहीं आधुनिक लेखक भी इससे पीछे नहीं रहे। इस पाठ में प्राचीन एवम् अर्वाचीन दोनों कवियों की चुनी हुई कुछ सूक्तियों को उपनिबद्ध किया गया है। छात्रों को इन सूक्तियों को कण्ठस्थ करना चाहिये। वाद-विवाद, भाषण-प्रतियोगिता तथा दैनिक व्यवहार के लिए सूक्तियाँ नितान्त उपयोगी तथा प्रभावोत्पादक होती हैं।

**स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा****विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।****विशेषतः सर्वविदां समाजे****विभूषणं मौनमपण्डितानाम्॥१॥****(भर्तृहरिः)****रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहु-****र्विद्यावतां वस्तुत एव रूपम्।****अपेक्षया रूपवतां हि विद्या****मानं लभन्तेऽतितरां जगत्याम् ॥२॥****(मङ्गलदेव शास्त्री)**

न दुर्जनः सज्जनतामुपैति शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः।
चिरं निमग्नोऽपि सुधा-समुद्रे न मन्दरो मार्दवमभ्युपैति ॥3॥

(भट्टरामनाथ शास्त्री)

कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु यत्नः सुमहान् खलानाम्।
निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव ॥4॥

(महाकवि विल्हण)

उत्साह-सम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदञ्च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ॥5॥

(विष्णुशर्मा)

दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु निमेषमात्रेण भजेद् विनाशम्।
कर्तुं कुलालस्य तु वर्षमेकं भेतुं हि दण्डस्य मुहूर्तमात्रम् ॥6॥

(सूक्तिमुक्तावली)

आरभेत हि कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः।
कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते ॥7॥

(कस्यचित्)



एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी ॥8॥

(चाणक्यनीतिः)

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः
 बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
 पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः
 करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ॥9॥

(चाणक्यनीतिः)

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
 भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषापहम् ॥10॥

(वैद्यकीय सुभाषित संग्रह)

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
 सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥11॥

(हितोपदेश)

अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रं
 पाण्डित्यसम्भृतमतिस्तु मितप्रभाषी।
 कांस्यं यथा हि कुरुतेऽतितरां निनादं
 तद्वत् सुवर्णमिह नैव करोति नादम् ॥12॥

(सूक्तिः)

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|------------|---|--|
| स्वायत्तम् | - | स्वाधीन। |
| विधात्रा | - | ईश्वर के द्वारा। |
| छादनम् | - | आवरण। |
| सर्वविदाम् | - | सर्व वेत्ति इति तेषाम्, सब कुछ जानने वालों के। |
| बुधाः | - | विद्वान् लोग। |
| आहुः | - | कहते हैं। |
| जगत्याम् | - | संसार में। |

| | | |
|--------------|---|----------------------|
| विमुच्य | - | छोड़कर। |
| खलानाम् | - | दुष्टों का। |
| निरीक्षते | - | देखता है। |
| केलिवनम् | - | आमोद-प्रमोद का वन। |
| क्रमेलकः | - | ऊँट। |
| व्यसनेषु | - | विपत्तियों में। |
| असक्तम् | - | न लगा हुआ। |
| याति | - | जाता है। |
| प्रयासेन | - | प्रयत्न से। |
| निमेषमात्रेण | - | क्षण मात्र से। |
| कुलालस्य | - | कुम्भकार का। |
| शर्वरी | - | रात। |
| वेत्ति | - | जानता है। |
| करी | - | हाथी। |
| भेषजम् | - | औषधि। |
| वारि | - | जल। |
| प्रलपति | - | बकता है। |
| अजस्रम् | - | निरन्तर। |
| सम्भृतमतिः | - | निश्चित बुद्धि वाला। |
| निनादम् | - | आवाज। |

सन्धिविच्छेदः

| | | |
|--------------------------|---|----------------------------------|
| स्वायत्तमेकान्तगुणम् | - | स्वायत्तम् + एकान्त + गुणम् |
| छादनमज्ञतायाः | - | छादनम् + अज्ञतायाः |
| मौनमपण्डितानाम् | - | मौनम् + अपण्डितानाम् |
| बुधास्तदाहुर्विद्यावताम् | - | बुधाः + तद् + आहुः + विद्यावताम् |

| | | |
|----------------------------|---|------------------------------------|
| लभन्तेऽतितराम् | - | लभन्ते + अतितराम् |
| सज्जनतामुपैति | - | सज्जनताम् + उपैति |
| सहस्रैरपि | - | सहस्रैः + अपि |
| निमग्नोऽपि | - | निमग्नः + अपि |
| मार्दवमभ्युपैति | - | मार्दवम् + अभि + उप + एति |
| उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रम् | - | उत्साह + सम्पन्नम् + अदीर्घसूत्रम् |
| व्यसनेष्वसक्तम् | - | व्यसनेषु + असक्तम् |
| दृढसौहृदञ्च | - | दृढसौहृदम् + च |
| कर्माण्यारभमाणम् | - | कर्माणि + आरभमाणम् |
| एकेनापि | - | एकेन + अपि |

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) कः कण्टकजालं पश्यति?
- (ख) शर्वरी केन भाति?
- (ग) कः गुणं वेत्ति?
- (घ) अजीर्णे किं भेषजम् अस्ति?
- (ङ) सर्वस्य लोचनं किम् अस्ति?
- (च) कः निरन्तरं प्रलपति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) केषां समाजे अपण्डितानां मौनं विभूषणम्?
- (ख) के सर्वलोकस्य दासाः सन्ति?
- (ग) केन कुलं विभाति?
- (घ) सिंहः केन विभाति?
- (ङ) भोजनान्ते किं विषम्?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) विधात्रा अज्ञतायाः छादनं विनिर्मितम्।
 (ख) विद्यावतां विद्या एव रूपम् अस्ति।
 (ग) लक्ष्मीः शूरं प्राप्नोति।
 (घ) बली बलं वेत्ति।
 (ङ) शास्त्रं परोक्षार्थस्य दर्शकम् अस्ति।
 (च) कांस्यम् अतितरां निनादं करोति।

4. उचितपदैः सह रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) एकेन अपि साधुना सुपुत्रेण सर्वम् आह्लादितं यथा शर्वरी।
 (ख) लक्ष्मीः उत्साह-सम्पन्नम् अदीर्घसूत्रं व्यसनेषु असक्तं कृतज्ञं
 च निवासहेतोः स्वयं याति।

5. प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत-

| | शब्दः | प्रत्ययः | विभक्तिः |
|---------------|-------|----------|----------|
| यथा- रूपवताम् | रूप | मतुप् | षष्ठी |
| (क) कृतम् | | | |
| (ख) प्रविश्य | | | |
| (ग) विमुच्य | | | |
| (घ) भेतुम् | | | |
| (ङ) कर्तुम् | | | |

6. पर्यायवाचिभिः सह मेलनं कुरुत-

| | |
|-----------------|-------------|
| यथा- स्वायत्तम् | स्वाधीनम् |
| (क) विमुच्य | क्षणमात्रम् |
| (ख) क्रमेलकः | उष्ट्रः |

| | |
|--------------------|-------------|
| (ग) याति | परित्यज्य |
| (घ) कुलालस्य | रात्रिः |
| (ङ) शर्वरी | जानाति |
| (च) वेत्ति | कुम्भकारस्य |
| (छ) करी | गजः |
| (ज) अजस्रम् | निरन्तरम् |
| (झ) प्रलपति | कथयति |
| (ञ) मुहूर्तमात्रम् | गच्छति |

7. विलोमपदैः सह योजयत-

| | |
|------------------|--------------|
| यथा- स्वायत्तम् | पराधीनम् |
| (क) अज्ञतायाः | सज्जनानाम् |
| (ख) अपण्डितानाम् | मूर्खाः |
| (ग) बुधाः | अपमानम् |
| (घ) मानम् | आयाति |
| (ङ) खलानाम् | अकृतज्ञम् |
| (च) याति | निराशायाः |
| (छ) कृतज्ञम् | विद्वत्तायाः |
| (ज) आशायाः | अनासक्तम् |
| (झ) आसक्तम् | अकृतम् |
| (ञ) कृतम् | अजीर्णे |
| (ट) जीर्णे | पण्डितानाम् |

8. विशेषणं विशेष्येण सह योजयत-

| | |
|--------------|-----------|
| यथा- शूरम् | पुरुषम् |
| (क) एकेन | कुलम् |
| (ख) अल्पज्ञः | सुपुत्रेण |

| | |
|-------------|--------|
| (ग) सर्वम् | पुरुषः |
| (घ) एकम् | यत्नः |
| (ङ) सुमहान् | लोकम् |

9. कः केन विभाति

| | |
|--------------|-----------|
| (क) गुणी | चन्द्रेण |
| (ख) शर्वरी | गुणेन |
| (ग) विद्वान् | बलेन |
| (घ) सिंह | सुपुत्रेण |
| (ङ) कुलम् | विद्यया |

10. अधोलिखितानि पदानि उचितरूपेण संयोज्य वाक्यानि रचयत-

| | | | |
|----------|------------|-----------|-------------|
| विधात्रा | सर्वविदाम् | | अस्ति |
| लक्ष्मीः | | भूषणम् | विभाति |
| मौनम् | कण्टकजालम् | एव | |
| शर्वरी | शूरम् | सुपुत्रेण | पश्यति |
| गुणी | | तु | शोभते |
| क्रमेलकः | | | विनिर्मितम् |
| कुलम् | छादनम् | | भाति |
| | | गुणेन | पश्यति |

11. पाठस्य चित्रं दृष्ट्वा उचितां पंक्तिं चित्वा लिखत-

.....

.....

.....

.....

योग्यताविस्तारः

भावविस्तारः

1. वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे
दक्षे नरे कर्मणि वर्तमाने।
अक्रोधने देवपरे कृतज्ञे
जितेन्द्रिये नित्यमुदीर्णसत्त्वे॥
2. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च॥
3. सदा चरति खे भानुः सदा वहति मारुतः।
सदा धत्ते भुवं शेषः सदा धीरोऽविकथनः॥
4. रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः॥

